ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(2): 148-150
www.allresearchjournal.com
Received: 21-12-2020
Accepted: 08-01-2021

अमर नाथ
प्लॉट नं 95, लमही, मुंशी प्रेमचन्द रोड) शिवपुर वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अमर नाथ
प्लॉट नं 95, लमही, मुंशी प्रेमचन्द रोड) शिवपुर वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

Character of body (Prakrity) (Assessment of pralamb bahu, prithupeen vaksha & mahalalat)

अमर नाथ

सारांश
आयुर्वेदीय दृष्टि से प्रकृति ज्ञान का अपना विशेष स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति का विशिष्ट शारीरिक स्वरूप तथा मानसिक स्वभाव होता है। इसे उसकी प्रकृति कहते है। प्रकृति शब्द का तात्पर्य संस्कृत भाषा के अनुसार – प्रकरोति इति प्रकृतिः।
अर्थात जो अन्य तत्वों को पैदा करती है, किन्तु वह स्वतः किसी एक से निर्मित नहीं होती है।
प्रकृति शब्द दो शब्द से मिलकर बना है –
प्र + कृति
प्र का तात्पर्य प्रकृष्ट है। कृति का तात्पर्य सृष्टि से है। यह आयुर्वेद में वर्णित मूल प्रकृति है।
प्रकृति एक व्यापक अर्थकारी शब्द है। प्रलम्बबाहु, प्रिथुपिनवक्ष तथा महाललाट का उल्लेख प्रकृति परीक्षण के अन्तर्गत किया गया है।

मुख्य शब्द : आयुर्वेदीय दृष्टि, प्रकृति ज्ञान, शारीरिक स्वरूप

प्रस्तावनाः
आयुर्वेद वाङ्गमय में आचार्य सुश्रुत ने कहा है कि प्रकृति का निर्माण गर्भाशय मे शुक्र और शोणित के संयोग के समय एक, दो या तीन दोषों की उत्कटता (Predominance) के आधार पर होता है।
चरक संहिता – प्रकृति का वर्णन करते हुए आचार्यो ने इसे निम्नलिखित कारकों से निर्मित हुआ मानते है –

1. शुक्र प्रकृति (Nature of Sperm)
2. शोणित प्रकृति (Nature of Ovum)
3. काल प्रकृति (Nature of time)
4. गर्भाशय प्रकृति (Nature of uterus)
5. माता का आहार–विहार (Nature of food and behaviour of mother)
6. महाभूत विकार प्रकृति (Nature of the product of Mahabhutas)

प्रलम्बबाहु, प्रिथुपिनवक्ष तथा महाललाट विषय के मापन के दो प्रकार के माप दण्ड होते है –

1. व्यक्ति परक (Subjective)
2. वस्तु परक (Objective)

प्रकृति, सार आदि परीक्षा में दर्शन, प्रश्न एवं स्पर्शन परीक्षा की जाती है। यह बिन्दु प्रलम्बबाहु, प्रिथुपिनवक्ष तथा महाललाट में व्यक्ति परक एवं वस्तु परक भी।
अंगूली प्रमाण, शास्त्र में उल्लिखित अंगूली प्रमाण परीक्षा वस्तु परक मापदण्ड है।
शरीर रचना में अंग रेखाकंन द्वारा इसे समझा जा सकता है। शरीर क्रिया की दृष्टि से उनमें उपस्थित लक्षण एवं क्रियाओं के द्वारा जाना जा सकता है।
प्रलम्बबाहु वाला जानुभुज और अच्छे धनुषवाण चलाने वाला होता है तथा शूरवीर, योद्वा, पराक्रमी, एश्वर्यवान होता है।
कफ का गुण गुरू होने से गुरूत्व शरीर, महत शरीर होता है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature) - Main Thrust

स्वस्थ की परीभाषा –

सममांस प्रमाणस्तु सम संहननरोनरः।
दृष्टिइन्द्रियअविकाराणाम् बलेनाअविभूयते।।

दशविध परीक्षा में संहनन परीक्षा के लक्षण निम्न है –

प्रखर संहनन (प्रखर)
मध्यम संहनन
अवर संहनन

प्रखर संहनन मे सर्वाधिक लक्षण अच्छे शरीर, स्वस्थ श्लेष्म प्रकृति पुरूष में उपचयात्मक, ज्ञानात्मक और इन्द्रिय दृढ़ता का परिचारक होता है।

प्रकृति को प्रभावित करने वाले कारण – सहायक

1. जाति (Race)
2. कुल (Family)
3. देश (Land)
4. काल (Time & Season)
5. वय (Age)
6. प्रत्यात्मनियता (Individuality or soul fo particular person)

प्रलम्बबाहु – श्लेष प्रकृति व्यक्ति की बाहुप्रलम्ब, अजानुभुज होते है। यह एक आकार परीक्षा है।

पृथुपीनवक्ष – विशाल वक्षस्थल के साथ वातिक वक्षस्थल संकुचित होता है। पैतिक मध्यम तथा कफ प्रकृति का विशाल होता है।

महाललाट – महामस्तिष्क में चिन्तन, मनन एवं बौद्विक क्षमता का प्रदर्शन करता है।
तत्वात्मक दृष्टि से इनमें जल व पृथ्वी महाभूत की प्रधानता होती है।

लाक्षणिक दृष्टि से श्लेष्म प्रकृति का वर्णन अधोलिखित है – (अ.हृ,शा.3)

श्लेष्मा सोमः श्लेष्मलस्तेन सौम्यो गूढस्निग्धश्लिष्टसन्ध्यस्थिमांसः।
क्षुत्तृड़दुः खक्लेशघर्मैरतसो बुद्वया युक्तः सात्विकः सत्यसन्धः।। 96।।
प्रियड्गुदूर्वाशरकाण्डशस्त्रगोरोचनापद्यम्सुवर्णवर्णः।
प्रलम्बबाहुः पृथुपीनवक्षा महाललाटो घननीलकेशः।। 97।।

निम्नलिखित कारक एक दूसरे रूप में व्यक्तित्व विकास से जुड़े हुए हैं –

1. आत्मज भाव	2. पूर्वजन्मकृतकर्म	3. पंचमहाभूत
4. सत्वज भाव	5. मातृज भाव	6. पितृज भाव
7. रसज भाव	8. सात्म्यज भाव	9. जाति
10. कुल	11. देश	12. वय
13. काल	14. प्रत्यात्मनियता	

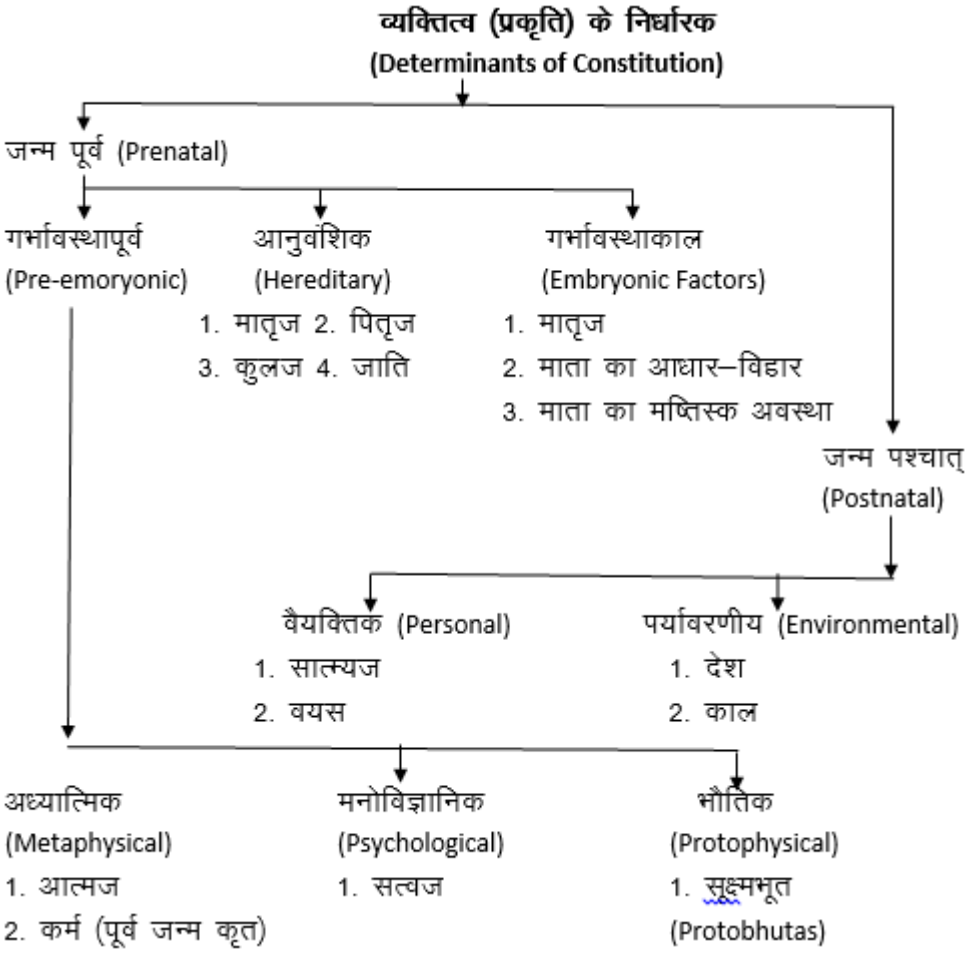

निष्कर्ष -

शुक्रशोणित संयोगे यो भवेद्दोष उत्कटः।
प्रकृतिर्जायते तेन तस्या में लक्षणं श्रुणु।।

शुक्र और शोणित की प्रकृति, काल तथा गर्भाशय की प्रकृति, माता के आधार–विहार की प्रकृति और महाभूतों के विकार की प्रकृति पर गर्भ शरीर की प्रकृति निर्भर होती है।

उन्नतललाट, मस्तिष्क क्षमता अधिक होगी। मध्यम ललाट को मध्यम और संकृण लालट की कम होगी। निचली योनियों (पशुओं) में उन्नतललाट नही होता है। उन्नतललाट न होने से उनमें विचारणीय क्षमता अल्प होती है। पृथुपीन वक्ष में पराक्रम, बल, उर्जा अपेक्षाकृत अन्य प्रकृतियों से अधिक होती है। घननील केश उत्तम स्वास्थ्य को दर्शाते है।

सन्दर्भ -

1. अष्टांग हृदय
2. चरकसंहिता
3. सुश्रुतसंहिता
4. भेलसंहिता
5. हारीतसंहिता
6. शब्दकल्पद्रुम
7. मेदिनी कोश
8. अष्टांग संग्रह